

पगिली वेंकैया, तरिंगे के अभकिल्पक

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

प्रधानमंत्री ने [पगिली वेंकैया](#) को उनकी **जयंती (2 अगस्त)** पर श्रद्धांजलि दी।

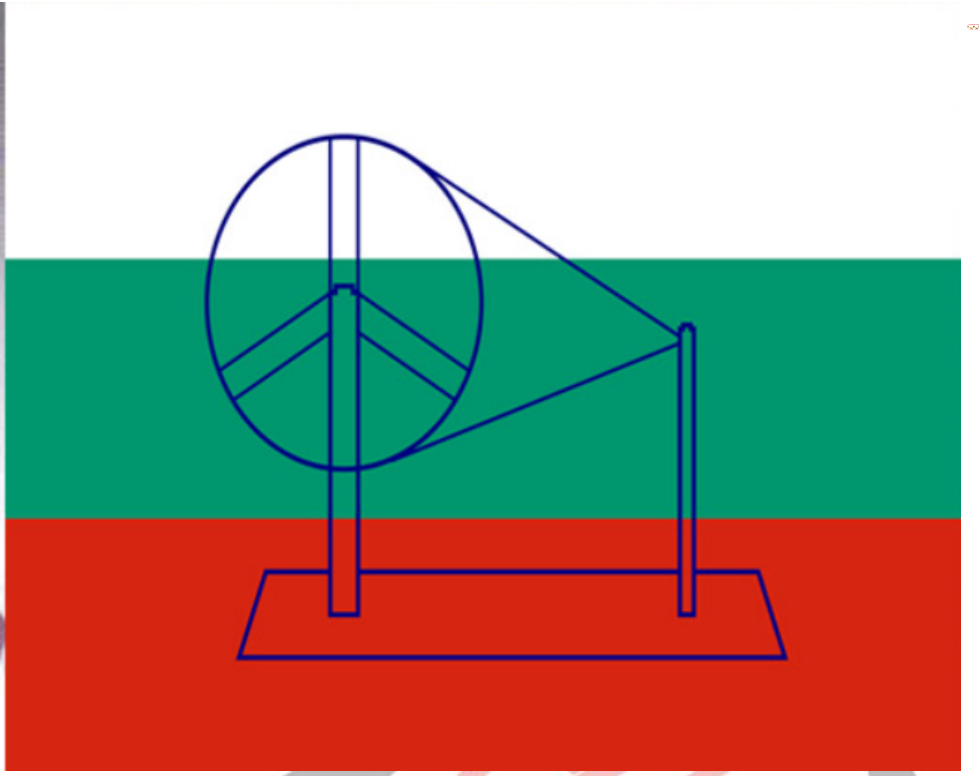
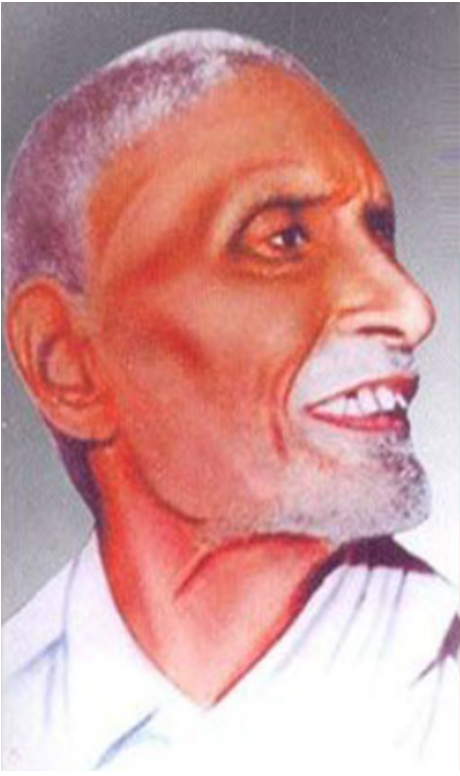
- उन्होंने नागरिकों से 9 से 15 अगस्त, 2024 के दौरान तरिंगा फहराकर [हर घर तरिंगा आंदोलन](#) का समर्थन करने का भी आग्रह किया।

ध्वज का विकास:

- वर्ष 1916 में, पगिली वेंकैया ने **भारत के लिये एक राष्ट्रीय ध्वज** नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की, जिसमें अन्य देशों के झंडों से प्रेरित होकर [संभावित भारतीय ध्वज](#) के लगभग 30 डिज़ाइन शामिल थे।
- राष्ट्रीय ध्वज के लिये वेंकैया के डिज़ाइन को अंततः **वर्ष 1921** में [वजियवाड़ा](#) में कॉंग्रेस की बैठक में [महात्मा गांधी](#) द्वारा अनुमोदित किया गया था।
- [सवराज ध्वज](#) कहे जाने वाले प्रारंभिक ध्वज में दो कर्षित पट्टियों में **2 लाल रंग** की और **एक हरे रंग** की थी (जो क्रमशः **हनुओं और मुसलमानों के धार्मिक समुदायों का प्रतिनिधित्व** करती हैं) शामिल थीं। ध्वज में [चरखा](#) भी था, जो [सवराज](#) का प्रतीक था।
 - महात्मा गांधी ने [वेंकैया](#) को [शांति](#) का प्रतीक करने के लिये एक श्वेत पट्टी जोड़ने की सलाह दी।
- **ध्वज समिति (1931)** ने **लाल रंग की जगह केसरिया** रंग लगाया और केसरिया को सबसे ऊपर रखा, **उसके बाद श्वेत और फरि हरा रंग** लगाया। चरखे को बीच में **श्वेत पट्टी** पर रखा गया।
 - **रंग गुणों के प्रतीक** थे, न कि समुदायों के। यानी **केसरिया साहस एवं बलदान के लिये, सफेद सत्य एवं शांति के लिये तथा हरा विश्वास एवं शक्ति के लिये। चरखा जन-कल्याण के लिये था।**
- स्वतंत्रता के बाद, [राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद](#) के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय ध्वज समिति ने **चरखे की जगह अशोक चक्र** लगाया।

पगिली वेंकैया:

- उन्होंने दूसरा **बोअर युद्ध (वर्ष 1899-1902)** लड़ा।
- वर्ष 1913 में, उन्होंने आंध्र प्रदेश के बापटला में **जापानी भाषा में एक व्याख्यान** दिया, जिसे '**जापान वेंकैया**' कहा जाता है।
- **कंबोडिया कॉटन** पर उनके शोध के लिये उन्हें **पट्टी वेंकैया** के नाम से भी जाना जाता था।
- वर्ष 2009 में, उनके योगदान के लिये एक **डाक टिकट जारी किया गया** था।



और पढ़ें: [राष्ट्रीय ध्वज दृष्टि](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/pingali-venkayya,-the-man-behind-tricolour>